अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना के लिए शिक्षा

अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना का अर्थ

अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना का अर्थ व्यक्ति की इस भावना से है जिसमें एक राष्ट्र के निवासी केवल अपनी ही राष्ट्र के प्रति नहीं बल्कि विश्व के सभी राष्ट्र के प्रति प्रेम और आदर की अच्छी भावना रखते हैं और सभी के सुख समृद्धि और प्रगति की कामना करते हैं।

गोल्ड स्मिथ के अनुसार

अंतर्राष्ट्रीयता एक भावना है जो व्यक्ति को यह बताती है कि वह अपने राज्य का ही सदस्य नहीं है वरन विश्व का नागरिक भी है।"

अंतरराष्ट्रीय सद्भावना की आवश्यकता एवं महत्व

1-विश्व शांति एवं सद्भावना के लिए

2-संकीर्ण राष्ट्रीयता से मानव कल्याण असंभव

3-वैज्ञानिक, तकनीकी एवं शैक्षिक विकास के लिए

4-वासुदेव कुटुंबकम की भावना का विकास

5-एक राष्ट्र की दूसरे राष्ट्र पर निर्भरता

6-पिछड़े राष्ट्रों को विकसित करना

7-अंतरराष्ट्रीय व्यापार एवं विश्व सहयोग के लिए

अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास में बाधाएं

1-वर्तमान शैक्षिक उद्देश्य

2-विद्यालय और उसका वातावरण

3-युवकों में निराशा

4-संप्रदायिकता

5-संकीर्ण राष्ट्रीयता

6-बढ़ती हुई जनसंख्या

अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास के सिद्धांत

यूनेस्को द्वारा सन 1974 में निम्न सिद्धांत प्रतिपादित किए गए हैं।

1-सामाजिक विज्ञान के अध्ययन में नागरिकता की शिक्षा देने के लिए कक्षा स्कूल और समाज को प्रयोगशाला के रूप में प्रयोग करने की कोशिश की जाए।

2-इसके शिक्षण से बालकों में आलोचनात्मक तर्कशक्ति का विकास किया जाए।

3-सामाजिक विज्ञान के शिक्षण में समय विभिन्न मन मानव समुदायों के पारस्परिक सौहार्द पूर्ण संबंधों पर बल दिया जाए।

4-सामाजिक विज्ञान के अध्ययन में मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास के विषय में अध्यापन किए जाएं।

5-छात्रों की रुचि को संसार की किसी भी समस्या के प्रति प्रेरित किया जाए

6-सामाजिक विज्ञान के शिक्षण में उचित और जरूरी बातों को प्रस्तुत किया जाए।

7-सामाजिक विज्ञान के अध्ययन में प्रजाति धर्म और संस्कृति के कारण भेदभाव को समाप्त किया जाए।

अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना के लिए शिक्षा या शैक्षिक कार्यक्रम

1-शिक्षा के उद्देश्य-

A-संकीर्ण राष्ट्रीयता को शिक्षा के उद्देश्य से दूर रखा जाए।

B-छात्रों को संस्थानों के व्यक्तियों का, एक दूसरे के प्रति व्यवहार का, आलोचनात्मक निरीक्षण करने का प्रशिक्षण दिया जाए।

C-उनको समाज के निर्माण में सक्रिय भाग लेने के लिए तैयार किया जाए।

D-उनमें स्वतंत्र लेखन, भाषण ,निर्णय और विचार का विकास किया जाए।

2-पाठ्यक्रम एवं सहभागी क्रियाएं

3-शिक्षण विधियां एवं सुधार

4-शिक्षक

5-अनुशासन

6-विद्यालय

7-पाठ्य पुस्तकों में सुधार